बालमन कुछ कहता है

काश हमारा स्कूल देर से लगता

मेरा मन तो बहुत कुछ करने को करता है। मैं सुबह-सुबह जल्दी बिल्कुल नहीं उठना चाहती हूँ। काश हमारा स्कूल देर से लगता। मैं हमेशा सोचती हूँ कि हमारी स्कूल ड्रेस ब्राइट कलर की होनी चाहिए। रोज़-रोज़ वाईट-ब्लू ड्रेस बोरिंग लगती है। मुझे खेलना बहुत पसंद है। मन करता है खूब खेलूँ और, मेरी मम्मी मुझे आवाज़ दे-कर ना बुलाएँ। जब चाहूँ तभी घर आऊँ। मुझे नई-नई ड्रेस डालना अच्छा लगता है। रोज़ एक नई ड्रेस मिले और एक नई जोड़ी ड्रेस के रंग से मिलती जुलती सैंडिल जिसे पहनकर मैं इतराऊँ। मेरा मन करता है हर रोज़ ढेर सारी अच्छी चीज़ें खाने को मिले, बस खाना न खाना पड़े। उसकी जगह मुझे पिज्जा, बर्गर, गोल गप्पे, पेस्ट्री, बेसन के लड्डू और काजू बर्फी आदि खाने को मिले। स्कूल से जब घर आऊँ तो ये सब कुछ रोज़ टेबल पर लगी मिले। मुझे शॉपिंग पर जाना अच्छा लगता है। काश अपनी शॉपिंग मैं अकेली करती। जो मर्जी खरीदती। वैसे मैं जल्दी बड़ी होना चाहती हूँ। मैं डॉक्टर बनना चाहती हूँ। ढेर सारे पैसे कमाऊँगी। एक बड़ा सा घर बनाऊँगी, जिसमें मेरा स्वीमिंग पूल होगा। अपनी गाड़ी खुद ड्राईव करूँगी। वैसे मुझे डांस करना भी अच्छा लगता है। डांस करूँ और गाने गाऊँ, बस।

नाम: राधिका कौल
कक्षा: पाँचवी 'ई'
के॰वि॰ एन॰सी॰आर॰टी॰

बालमन कुछ कहता है

मैंने बनाई कहानी

तब मैं बहुत छोटी थी। स्कूल भी नहीं जाती थी, तो मुझे पढ़ना भी नहीं आता था। तब रोज रात को सोने से पहले हम सब को एक-एक कहानी सुनानी होती थी। एक कहानी मम्मी सुनाती, एक पापा, एक मेरी बड़ी बहन और एक मैं। मम्मी और पापा को बहुत सी कहानियाँ आती थी। बड़ी बहन पढ़ना जानती थी। उसे कहानियाँ पढ़ने का शौक भी था, तो कोई न कोई नई कहानी वह भी सुना ही देती थी। परेशानी होती थी तो मुझे क्योंकि मुझे तो वही कहानियाँ आती थी जो मम्मी-पापा और बड़ी बहन सुना देते थे। मैं नई कहानी सुनाऊँ भी तो कैसे? पर मैंने एक उपाय खोज ही निकाला। मैं पहले उन तीनो की कहानी सुनाने को कहती और अंत में जब मेरी बारी आती तो मैं उन तीनो की सुनाई कहानियाँ मिलाकर एक नई कहानी बना देती। मेरी कहानी सुनकर मम्मी-पापा और मेरी बहन खूब हँसते। उन्हें हर रोज यह इंतजार रहता कि आज मैं कौन सी नई कहानी बनाकर सुनाने वाली हूँ।

मानवी जयेश
कक्षा VII
होली चाइल्ड ऑक्जीलियम स्कूल